

गांव के गुवाड़ से निकलकर प्रकाशित होने वाले दैनिक अखबार भीम प्रज्ञा की मजबूती के लिए पाठक बनिए और बनाइए अपनी प्रतिक्रिया दीजिए

हेल्पलाइन - 9983040937

Bheem Pragya publication

A/C No: 61347330768

IFSC Code- SBIN0031880

Phone pe , G-pay

9983040937

प्रधानमंत्री ने कोयंबटूर में पीएम-किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त की जारी

एजेसी

कोयंबटूर

पीएम नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कोयंबटूर में एक समारोह में लाभार्थियों को पीएम-किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त हस्तांतरित की। 9 करोड़ लाभार्थियों के बैंक खातों में 18,000 करोड़ से अधिक की राशि सीधे हस्तांतरित की गई। पीएम मोदी ने प्राकृतिक कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और दक्षिण भारत राष्ट्रीय कृषि शिखर सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने स्थानीय किसानों से मुलाकात की और बातचीत की और प्रदर्शनी का निरीक्षण किया, जिसमें विभिन्न कृषि उत्पादों के साथ-साथ पौधों और फसलों की वृद्धि को दर्शाने के लिए एक कोना भी था। प्रधानमंत्री के साथ तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि भी थे।

9 करोड़ बैंक खातों में 18,000 करोड़ की राशि हस्तांतरित की

किसानों से की मुलाकात और प्रदर्शनी भी देखी, दक्षिण भारत राष्ट्रीय कृषि शिखर सम्मेलन में भाग लिया

पटुपर्थी में सत्य साईं के शताब्दी समारोह में पीएम ने की शिरकत, सीएम नायडू ने किया सम्मान

सामाजिक योगदान के बिना कर्म का कोई अर्थ नहीं

आंध्र प्रदेश में 'सुकन्या समृद्धि योजना' लॉन्च

स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी

मंच पर पीएम मोदी के ऐश्वर्या ने पैर छू कर लिया आशीर्वाद

बॉलीवुड अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन भी श्री सत्य साईं बाबा के जन्म शताब्दी समारोह में शामिल हुईं इस दौरान की एक झलक सामने आई है, जिसमें पीएम मोदी और ऐश्वर्या राय एक साथ नजर आए। इतना ही नहीं ऐश्वर्या राय ने पीएम मोदी के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया। ये वीडियो सोशल मीडिया पर आते ही वायरल गया।

स्बर संक्षेप

जेल गार्ड ने पत्नी-सास को उड़ाया, खुदकुशी की गुरदासपुर। के.डी. जेल गुरदासपुर में निजी गार्ड के तौर पर तैनात एक पूर्व सैनिक ने अपनी सरकारी पहचान गुप्रीत सिंह के रूप में हुई है, जो पूर्व सैनिक था और निजी कंपनी पैसको के तहत गुरदासपुर में गार्ड की ड्यूटी कर रहा था।

आज मणिपुर जाएंगे संघ प्रमुख भागवत नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत गुरुवार को मणिपुर जाएंगे।

जातीय हिंसा भड़कने के बाद से यह उनका पहला राज्य दौरा है। संघ के राज्य महासचिव तरुण कुमार ने बताया, वे 3 दिन की यात्रा के दौरान नागरिकों, उद्यमियों और जनजातीय समुदाय के प्रतिनिधियों से बातचीत करेंगे।

लघु खनिज सुधार में उत्तराखंड का सम्मान देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड में खनन सुधारों में निरंतर

उल्लेखनीय कदम उठाए जा रहे हैं। पारदर्शिता, तकनीक और सख्त निगरानी के आधार पर 4 साल में प्रदेश ने खनन क्षेत्र में रिकॉर्ड उपलब्धियां हासिल की हैं। उत्तराखंड ने लघु खनिज सुधार में देश में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

लालू यादव का करीबी कात्याल हिरासत में गुरुग्राम। ईडी ने गुरुग्राम में घर खरीदारों के साथ कथित धोखाधड़ी से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद के परिवार के करीबी माने जाने वाले रियल एस्टेट कारोबारी अमित कात्याल को गिरफ्तार किया है। कात्याल को पीएमएनएलए के तहत गिरफ्तार किया है।

देश के 272 प्रतिष्ठित नागरिकों (जज, रिटायर्ड नौकरशाह, सैन्य अफसरों) ने लिखा पत्र

राजनीतिक हताशा को 'संस्थागत संकट' का रूप देने की कोशिश न करें, यह 'षड्यंत्रकारी' राहुल ने 'परमाणु बम', चुनाव आयोग को देशदोही तक कह डाला

हार की हताशा से उपजा क्रोध

जब जीत मिले तो साथ लेते चुप्पी

संस्थाओं पर राजनीतिक हमले न करें

अपने 'बेदम' आरोपों में संयम बरतें: विक्रम

तलाक-ए-हसन पर भड़का सुप्रीम कोर्ट उठाए सवाल एजेसी

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम समुदाय में किसी पति के खुद उपस्थित हुए बिना अपने किसी वकील के माध्यम से तलाक भेजने की प्रथा पर सख्त नाराजगी जाहिर की है और सवाल उठाए हैं कि क्या किसी सभ्य समाज में इसकी इजाजत दी जा सकती है? जस्टिस सुर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन जजों की पीठ ने संकेत दिया कि पीठ तलाक-ए-हसन प्रथा को रद्द करने पर विचार कर सकती है। बेनजीर हीना बनाम भारत संघ एवं अन्य के मामले को सुनवाई करते हुए जस्टिस सुर्यकांत, जस्टिस उज्जल भुयान और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने यह भी संकेत दिया कि वह इसे 5 न्यायाधीशों की पीठ को सौंप सकती है।

आरोपी पति के अहंकार पर नाराज हो गए मीलॉर्ड, प्रथा को रद्द करने पर करेंगे विचार

बेनजीर बनाम भारत संघ और अन्य के मामले की सुनवाई

प्रथा व्यापकता से समाज को प्रभावित कर रही

सुझावों को अनदेखा किया गया

सीजेआई ने लिखा कि बाध्यकारी फैसलों को नजरअंदाज किया गया। इससे ट्रिब्यूनल्स में नियुक्तियों और कार्यकाल प्रभावित होते हैं, जो संवैधानिक मूल्यों के विरुद्ध है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने किए नामांकन आमंत्रित

डिफेंस साइंस टेक्नोलॉजी में खास रिसर्च पर मिलेंगे 10 लाख कॉलेज और विश्वविद्यालयों से 1 दिसंबर तक आवेदन मांगा

सरकारी संगठनों, उद्यमों और निजी संगठनों को मिलेगा सम्मान

इन् निकायों के माध्यम से करें नामांकन

ये पुरस्कार सरकारी संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों, निजी संगठनों (शैक्षणिक, उद्योग और अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं) में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिए खुले हैं। कोठाड़ी पुरस्कार रक्षा विज्ञान में बुनियादी अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान के लिए दिया जाएगा, जबकि दूसरा पुरस्कार रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास के लिए दिया जाएगा।

नामांकन केवल मंत्रालय, विभागों, संगठनों, निजी एजेंसियों के माध्यम से ही स्वीकार किया जाएगा। नामांकन पत्र में नामांकित व्यक्ति की सहमति उसके हस्ताक्षर के माध्यम से दर्शाई जानी चाहिए और व्यक्तिगत जानकारी अनिवार्य है। नोटिस में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा सीधे किया गया नामांकन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

उपलब्धियों और नवाचारों को मान्यता मिलेगी

यूजीसी ने कहा कि इन पुरस्कारों का उद्देश्य सरकारी संगठन/सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों/निजी संगठनों (शैक्षणिक, उद्योग, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं) में सेवारत व्यक्तियों की उत्कृष्ट उपलब्धियों और नवाचारों को मान्यता देना है, जिनके योगदान ने हमारे देश की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रक्षा संबंधी अनुसंधान की प्रगति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।



बिहार जीत से उभरी नई उम्मीदें और गहरी चुनौतियों



ललित गर्ग

बिहार की यह जीत इतिहास में दर्ज होगी- सिर्फ इसलिए नहीं कि परिणाम अप्रत्याशित थे, बल्कि इसलिए कि इसने एक नए अध्याय के लिखे जाने की उम्मीद जगाई है। अब समय है कि यह उम्मीद हकीकत में बदल सके। राजनीति तभी सार्थक होगी जब यह जनता के जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम बने और बिहार इस दिशा में देश के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

बिहार का यह चुनाव केवल एक राजनीतिक मुकाबला नहीं था, बल्कि लोकतंत्र की चेतना, जनता के विश्वास और नेतृत्व की विश्वसनीयता को परखने का अवसर भी था। परिणाम जिस तरह सामने आए, उन्होंने न केवल बिहार बल्कि पूरे देश एवं दुनिया को चौंका दिया। यह जीत केवल गठबंधन की सामूहिक ताकत की नहीं, बल्कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में वर्षों से स्थापित सुशासन मॉडल और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति जनता के अटूट भरोसे का परिणाम है। बिहार की महिलाओं ने इस चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाई है-उनकी उम्मीदें, उनका साहस और उनका भरोसा इस परिणाम के मूल में खड़ा दिखाई देता है। बिहार में इतने एकतरफा नतीजे की उम्मीद किसी को नहीं रही होगी। चुनाव प्रचार के दौरान जो लड़ाई टक्कर की दिख रही थी, वह आखिर में केवल भ्रम साबित हुई। जनता ने न महागठबंधन के बदलाव के नारे पर यकीन किया और न ही प्रशांत किशोर की अलग राजनीति पर भरोसा जताया, बल्कि खुद को परिवक् एवं जागरूक प्रदर्शित करते हुए मूल्यों एवं विकास के मानकों पर मतदान दिया। आंकड़ों का विश्लेषण होता रहेगा, लेकिन मोटे तौर पर यह परिणाम कई संदेश देता है कि अब बिहार जंगलराज नहीं चाहता, विकास की नई सुबह देखना चाहता है, एसआईआर को वोट चोरी के रूप में दी गयीप्रस्तुति उसे स्वीकार्य नहीं हुई, वह अतीत के भ्रष्ट शासन से मुक्ति के लिये अतीत की त्रासद यादों एवं भविष्य के सुनहरे भविष्य के बीच चयन करते हुए लालू-राबड़ी यादव के शासनकाल की की काली छाया नहीं चाहता। भले ही तेजस्वी यादव पूरे समय इसी नैरेटिव को तोड़ने में लगे रहे कि बक बदल चुका है और वह दौर अब नहीं लौटेगा। उन्होंने उल्टे अपराध पर नीतीश सरकार को घेरने की कोशिश की, पर सफल नहीं रहे। नीतीश कुमार के लिए 20 बरसों में यह पहला विधानसभा चुनाव था, जहां वह गठबंधन का तो चेहरा थे, पर सीएम पद के उम्मीदवार नहीं थे। उनकी छवि को थुंखेलाने एवं उन्हें बीमार घोषित करने के भी पूरे प्रयत्न हुए लेकिन, परिणाम ने साबित किया है कि नीतीश अब भी बिहार के सबसे बड़े राजनीतिक प्रतीक एवं सुशासन-पुरुष हैं। वह अब तक नौ बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ले चुके हैं, कई बार उन्होंने पाला बदला, लेकिन जनता का यकीन उन पर बना हुआ है।



इसकी बड़ी वजह उनकी बेदाग छवि भी है। लेकिन इस बार उनकी चुनौतियां भी बड़ी हैं। वैसे लोकतंत्र की खूबसूरती यह है कि जीत जितनी बड़ी होती है, चुनौतियां भी उतनी ही व्यापक हो जाती हैं। बिहार में एनडीए की इस ऐतिहासिक विजय के बाद जिस दौर की शुरुआत हो रही है, वह उत्साह से कहीं अधिक जिम्मेदारी का दौर है। नीतीश कुमार एक बार फिर मुख्यमंत्री बन रहे हैं, यह अपने-आप में निरंतरता, स्थिरता और सुशासन की अपेक्षाओं को नयी ऊँचाई देता है। परंतु अब उनके सामने जो प्रश्न खड़े हैं, वे कहीं अधिक गहरे, जटिल और चुनौतीभरे हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की करारी हार केवल एक राजनीतिक पराजय नहीं, बल्कि परिवारवादी राजनीति के प्रति जनता की निर्णायक और स्पष्ट निष्पत्ति है। मतदाताओं ने यह संदेश दो टूक दिया है कि राजनीति किसी परिवार, वंश या व्यक्तिगत प्रभुत्व की जागीर नहीं हो सकती। खासकर क्षेत्रीय दलों में फैला वंशवाद, व्यक्तिवाद और उत्तराधिकार की अनिवार्य राजनीति जनता को लगातार विचलित करती रही है। परिणामों ने यह उजागर कर दिया कि अब मतदाता सिर्फ चेहरे और परिवारों के मोहजाल में नहीं फँसना चाहते, बल्कि वे विकास, पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को प्राथमिकता देने लगे हैं। महागठबंधन की हार उसी व्यापक जनभावना का परिणाम है, जिसमें जनता

ने यह तय कर दिया कि लोकतंत्र में जनता की सत्ता सर्वोपरि है, किसी भी राजनीतिक खानदान की नहीं। बिहार की सबसे बड़ी चुनौती रोजगार की है। वर्षों से यह राज्य बेरोजगारी के दर्द से जूझता रहा है। करोड़ों युवाओं की आंखों में नौकरी, अवसर और सुरक्षित भविष्य का सपना है। चुनावी वादे जिस उत्तेजना के साथ किए जाते हैं, उन्हें व्यवस्थित नीति, धैर्य और राजनीतिक ईमानदारी से लागू करना किसी भी सरकार के लिए आसान कार्य नहीं होता। लेकिन जनता ने इस बार उम्मीदों की जो गहरी सौंपी है, वह स्पष्ट संकेत है कि अब पूरा बिहार ठोस काम चाहता है, खोखले वादे नहीं। दूसरी बड़ी चुनौती कानून-व्यवस्था की है। सुशासन का मॉडल तभी सार्थक है जब आम नागरिक के जीवन में सुरक्षा की ठोस अनुभूति हो। अपराध, राजनीतिक संरक्षण, दंगा-फसाद और अराजकता किसी भी समाज की प्रगति को रोकते हैं। नीतीश कुमार से जनता की अपेक्षा है कि वे एक बार फिर वही कठोरता, वही व्यवस्था और वही संतुलित रणनीति लेकर आएँ, जिसने कभी 'जंगलराज' को समाप्त कर सुशासन का नया इतिहास लिखा था। महिलाओं से किए गए वादे भी अब सरकार की प्राथमिक कसौटी बनेंगे। आधी आबादी ने जिस उत्साह और भरोसे के साथ एनडीए को पुनः सशक्त किया है, यह सरकार के लिए प्रेरणा के साथ-साथ उत्तरदायित्व भी है। सुरक्षा,

शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान-ये पांच मुद्दे बिहार की महिलाओं की असली जरूरत हैं, और चुनावी वादों का मूल्यांकन भी अब इन्हीं पर होगा। बिहार की अर्थव्यवस्था की मजबूती केंद्र सरकार के सहयोग पर भी निर्भर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और उनके विकास-एजेंडे ने इस चुनाव को निर्णायक रूप दिया। जब केंद्र और राज्य की नीतियों में तालमेल होगा, तब ही आर्थिक सुधार, निवेश, उद्योग, रोजगार-सृजन और आधारभूत संरचना के बड़े सपने साकार होंगे। बिहार को अब केवल वित्तीय सहायता की ही नहीं, बल्कि विकास की स्थायी संरचना की जरूरत है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ लाभान्वित हों। लेकिन इन सबके बीच एक बड़ा प्रश्न मन को झकझोरता है-लोकतंत्र में चुनाव कब तक केवल 'सौदेबाजी' बने रहेंगे? कब तक वादों की भीड़, लुभावने नारों और जातीय समीकरणों के आधार पर जनता के विश्वास की खरीद-फरोख्त चलती रहेगी? आखिर लोकतंत्र की स्वस्थ दिशा क्या हो? यह चुनाव परिणाम हमें इस सवाल के सामने खड़ा करता है कि राजनीति को फिर से मूल्यों, हृष्टि, दीर्घकालिक योजनाओं और नैतिकता की ओर लौटना होगा। लोकतंत्र की प्रतिष्ठा तभी बचेगी जब राजनीति भविष्यदर्शी बने, जब चुनाव उत्सव कम और उत्तरदायित्व अधिक हों। बिहार, जिसे कभी पिछड़ेपन, गरीबी, पलायन और अपराध का प्रदेश कहा जाता था, आज भारतीय लोकतंत्र का एक जीवंत प्रयोगशाला बन गया है। यह प्रदेश भविष्य में किस दिशा में जाएगा, यह केवल सत्ता की नीतियों पर ही नहीं, बल्कि जनता की जागरूकता, मीडिया की ईमानदारी और राजनीतिक दलों की नैतिक प्रतिबद्धता पर भी निर्भर करेगा। आज बिहार के पास अवसर है कि वह खुद को एक प्रगतिशील, शिक्षा-संपन्न, रोजगार-समृद्ध, सुरक्षित और आत्मनिर्भर राज्य के रूप में स्थापित करे। बिहार की यह जीत इतिहास में दर्ज होगी-सिर्फ इसलिए नहीं कि परिणाम अप्रत्याशित थे, बल्कि इसलिए कि इसने एक नए अध्याय के लिखे जाने की उम्मीद जगाई है। अब समय है कि यह उम्मीद हकीकत में बदल सके। राजनीति तभी सार्थक होगी जब यह जनता के जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम बने और बिहार इस दिशा में देश के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

सम्पादकीय



एडवोकेट
हरेश पंवार

Contact No.
9983040937

मैं बोलूंगा तो फिर कहोगे कि बोलता है

‘सही होकर भी झुक जाना: आत्मसम्मान की सबसे कठिन परीक्षा’

जीवन कई बार हमें ऐसे मोड़ों पर ले आता है, जहाँ सच्चाई का रास्ता सबसे कठिन साबित होता है। हम जानते हैं कि हम सही हैं, हमारा इरादा साफ है, और हमारी लड़ाई न्याय की है—फिर भी परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं कि हमें उन लोगों के सामने भी झुकना पड़ता है, जो गलत होते हुए भी अपनी शक्ति, चालाकी, पद या भीड़ के सहारे खुद को सही साबित करते हैं। यह स्थिति बाहरी रूप से भले ही सामान्य लगे, लेकिन भीतर एक तूफान खड़ा कर देती है। सही होकर भी झुकना किसी भी ईंसान के लिए सबसे कड़वी और गहरी पीड़ा बन जाता है। यह सिर झुकाने का क्षण नहीं, आत्मा के भीतर उठने वाला वह दर्द है जो शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। यहाँ मैं बोलूंगा तो फिर कहोगे कि बोलता है।

सही होकर भी झुक जाना एक बाहरी हार हो सकती है, लेकिन यह हमेशा कमजोर होना नहीं होता। कई बार जीवन हमें सिखाता है कि हर लड़ाई लड़नी जरूरी नहीं। गलत लोगों से झिड़ना, बहस करना या हर मोर्चे पर खुद को साबित करना समझदारी नहीं, बल्कि ऊर्जा का व्यर्थ खर्च है। बुद्धिमान व्यक्ति वही होता है जो यह समझ सके कि कौन-सी लड़ाई लड़नी है और कौन-सी छोड़ देनी है। शांत रहकर समय का इंतजार करना भी एक रणनीति है, और कई बार यह रणनीति हमें जीत के करीब ले जाती है। इस दुनिया में कई लड़ाइयाँ तलवार से नहीं, धैर्य और सोच से जीती जाती हैं। अक्सर हम सोचते हैं कि गलत व्यक्ति से झुक जाना हार है, लेकिन असल प्रश्न यह है कि झुकना क्यों पड़ा? यदि झुकना झगड़े से बचने के लिए है, शांति बनाए रखने के लिए है, या किसी बड़े नुकसान से बचने के लिए है—तो यह हार नहीं बल्कि विवेक और साहस है। हर बार आवाज उठाना बहादुरी नहीं होती; कई बार मौन भी उसी बहादुरी की परिभाषा होता है। मगर यदि झुकना डर, दबाव या आत्मसम्मान की कीमत पर है, तो निश्चित ही यह अंदर की एक गहरी हार है। यह हार हमें भीतर से तोड़ती है, लेकिन यही टूटना हमें मजबूत बनने की दिशा भी दिखाती है।

दुनिया की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि गलत लोग अक्सर बाहरी रूप में जीतते दिखाई देते हैं और सही लोग संघर्ष में। लेकिन यह जीत क्षणिक होती है। इतिहास गवाह है कि असत्य टिकता नहीं। महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला, बुद्ध, कबीर—इन सभी ने व्यवस्था के सामने कई बार चुप्री साधी, कई बार पीछे भी हटे, लेकिन अपनी आत्मा और सत्य के रास्ते से नहीं डिगे। उनकी चुप्री हार नहीं थी, बल्कि आगे की लड़ाई की तैयारी थी। सत्य को कभी भी तत्काल विजय नहीं मिलती, लेकिन उसकी जीत स्थायी और गहरी होती है। जीवन का सबसे गहरा संघर्ष बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि भीतर के तूफानों से होता है। जब हम सही होते हुए भी झुकते हैं, तो हमारे भीतर आत्मसम्मान, धैर्य, विवेक और आत्मबल की अग्नि जलती है। यह अग्नि हमें भीतर से मजबूत करने का काम करती है। यह हमें सिखाती है कि हर अपमान का पत्ता प्रतिशोध नहीं होता। कई बार प्रतिशोध से बड़ा उत्तर धैर्य और सही समय पर उठाया गया सही कदम होता है। गलत व्यक्ति की जीत उसके पद या ताकत से होती है, लेकिन सही व्यक्ति की जीत उसके चरित्र और धैर्य से होती है। सही होकर भी झुकना जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। यह उस यात्रा का हिस्सा है, जहाँ हम सीखते हैं कि सच्चाई और आत्मसम्मान का रास्ता आसान नहीं होता। यह रास्ता परीक्षा लेता है, गिराता है, पर गिराकर फिर उठाना भी सिखाता है। सच्चाई का मार्ग किसी हार में खत्म नहीं होता क्योंकि सत्य का अस्तित्व ही निरंतरता है, और असत्य का अस्तित्व अस्थायी। गलत लोग क्षणिक चमक लेकर आते हैं और समय के अंधेरे में खो जाते हैं, जबकि सही लोग धीरे-धीरे प्रकाश की ओर बढ़ते हैं और समय का इतिहास बन जाते हैं।

हिड़मा का अंत नक्सल आंदोलन के ताबूत में आखिरी कील, देश को लाल आतंक से मुक्ति दिलाने के करीब हैं अमित शाह



नीरज कुमार दुबे

भारत के आंतरिक सुरक्षा तंत्र के लिए 2025 एक निर्णायक मोड़ साबित हो रहा है। CPI (माओइस्ट) के सबसे क्रूर, सबसे चालाक और सबसे कुख्यात सैन्य कमांडर मर्दवि हिड़मा का खात्मा केवल एक ऑपरेशनल सफलता नहीं, यह एक बहुत बड़ा संदेश भी है। यह संदेश है उस अंतिम लड़ाई का, जिसकी समय सीमा खुद केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तय की थी। हिड़मा का अंत 30 नवंबर 2025 की डेडलाइन से ठीक 12 दिन पहले हुआ है। यह डेडलाइन अमित शाह ने सुरक्षा बलों को देते हुए कहा था कि हिड़मा का आतंक उसी दिन तक समाप्त होना चाहिए। हिड़मा की मौत ने यह स्पष्ट संकेत दे दिया है कि देश अब उस विजय रेखा के बेहद करीब है, जिसे गृह मंत्री ने 31 मार्च 2026 तक माओवाद को पूरी तरह समाप्त करने के रूप में परिभाषित किया था। हम आपको याद दिला दें कि अमित शाह ने पिछले वर्ष घोषणा की थी कि माओवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने का समय आ चुका है। उन्होंने बड़ी समय-सीमा देने के साथ-साथ सुरक्षा एजेंसियों को छोटे-छोटे लक्ष्य (milestones) भी सौंपे थे। जैसे- कुहीं किसी इलाके को माओवादियों से पूरी तरह मुक्त कराना, कहीं किसी शीर्ष माओवादी नेता को सम्पन्न के लिए मजबूर करना और



कहीं ऑपरेशनों के माध्यम से संगठन की कमर तोड़ देना। उसी रणनीति का सबसे अहम माइलस्टोन था हिड़मा का निपटारा, जिस पर अमित शाह ने हाल की समीक्षा बैठकों में निजी तौर पर जोर दिया था। हिड़मा का अंत उसी जंगल में हुआ, जहाँ से उसका आतंक शुरू हुआ था। आज यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अमित शाह की सख्त, निरंतर और परिणाम-उन्मुख नीतियों ने सुरक्षा बलों में वह गति भर दी, जिसकी भारत को वर्षों से आवश्यकता थी। माओवादी हिंसा जिस र तार से सिमट रही है, वह उनकी रणनीति का प्रत्यक्ष परिणाम है। कौन था हिड़मा और क्यों था इतना महत्वपूर्ण यदि इस सवाल पर गौर करें तो आपको बता दें कि मर्दवि हिड़मा माओवादियों की केन्द्रीय समिति का सबसे युवा सदस्य था, लेकिन उसकी कुख्याति, क्रूरता और क्षमताएँ उसे संगठन का सबसे खतरनाक सैन्य चेहरा बनाती थीं। वह PLGA की कुख्यात बटालियन नंबर 1 का कमांडर रहा

था। वह बस्तर का एकमात्र आदिवासी नेता था जिसे माओवादियों की केन्द्रीय समिति में जगह दी गई। छत्तीसगढ़, तेलंगाना और ओडिशा में कई बड़े हमले उसी की योजना का हिस्सा थे। वर्षों से सुरक्षा बल उसकी तलाश में थे, लेकिन वह हमेशा बच निकलता था। पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने उसकी माँ से मिलकर सम्पन्न की अपील भी करवाई, पर वह तैयार नहीं हुआ। उसकी मृत्यु पर बस्तर रेंज के IG सुंदरराज पी का यह बयान बिल्कुल सटीक है कि 'यह वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई में ऐतिहासिक माइलस्टोन है।' हम आपको बता दें कि केन्द्रीय समिति की शक्ति अब घटकर केवल 7 सदस्यों पर आ गई है। इनमें भी गणपति अस्सी के करीब है, मिसिर बेसरा झारखंड के कुछ क्षेत्रों तक सीमित है और संगठन का केंद्र आंध्र तेलुगु से खस हो रहा है। सक्रिय नेताओं में देवजी, संग्राम, गणेश उड्डेक, रामदर और दो क्षेत्रीय कमांडर बरसे देवा व पन्पा राव ही बचे हैं। अनुमान है

कि 100-150 से ज्यादा सशस्त्र माओवादी कैडर अब पूरे देश में नहीं बचे हैं। जो बचे हैं वह भी कुछ आरक्षित वनों और सीमावर्ती इलाकों तक सिमटे हुए हैं। देखा जाये तो 2025 में माओवादियों को जो सबसे बड़ी चोटें लगी हैं, वे अभूतपूर्व हैं। पहले डड़ नेता नंबाला केसव राव मारा गया फिर सोनू उर्फ वेणुगोपाल राव ने आत्मसमर्पण किया। इसके अलावा, कई केन्द्रीय समिति सदस्य मारे गए या सम्पन्न कर चुके हैं। सत्यानारायण रेड्डी, का। रामचंद्र रेड्डी, चेलपति, रवि, विवेक यादव, शंतु लक्ष्मी, सुजाता, चंद्रना और रुपेश जैसे वरिष्ठ कैडर ने हथियार डाल दिए हैं। यह परिदृश्य बताता है कि माओवादी संगठन अंतिम साँसें गिन रहे हैं। देखा जाये तो हिड़मा का खात्मा उन हजारों जवानों के संघर्ष, बलिदान और धैर्य का प्रतिफल है, जो वर्षों से नक्सल प्रभावित इलाकों में लड़ाई लड़ रहे हैं। यह उस केन्द्रीय नेतृत्व का भी प्रमाण है, जिसने लक्ष्य स्पष्ट किए, समयसीमाएँ तय कीं और परिणाम की मांग की। आज भारत पहली बार उस बिंदु पर खड़ा है जहाँ माओवादी संरचना बिखरी हुई है, उसकी केन्द्रीय समिति कमजोर है, टॉप कमांडर समाप्त हो गये या आत्मसमर्पण कर रहे हैं, कैडर संख्या सबसे निचले स्तर पर है और जनता का सहयोग सुरक्षा बलों की ओर झुक चुका है। बहरहाल, भारत दशकों से इस लाल आतंक से जूझ रहा था। अब पहली बार, देश उस ऐतिहासिक क्षण के बेहद करीब है जहाँ माओवादी हिंसा केवल स्मृति बन सकती है। यह उपलब्धि किसी एक ऑपरेशन का नहीं, यह राजनीतिक इच्छाशक्ति, स्पष्ट रोलप्ले और अमित शाह के नेतृत्व वाली कठोर, लक्ष्य-उन्मुख रणनीति की देन है। यदि वर्तमान गति बनी रहती है तो 31 मार्च 2026 की वह तारीख जिसे अमित शाह ने नक्सलवाद की अंतिम तिथि कहा है वह सिर्फ कागज की लक्ष्य नहीं बल्कि भारत की सुरक्षा इतिहास का निर्णायक मोड़ बन सकती है।

प्रदूषण की कीमत: क्या भारत को चाहिए एक व्यापक 'प्रदूषण कर'?



डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत आज उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ तेज आर्थिक विकास और बिगड़ते पर्यावरण के संकेत के बीच संतुलन बनाना अत्यंत कठिन चुनौती बन गया है। शहरों की हवा दिन-प्रतिदिन जहरीली होती जा रही है, नदियाँ औद्योगिक कचरे से भर रही हैं, भूमिगत जल स्तर घट रहा है, ठोस कचरे के पहाड़ महानगरों की पहचान बनते जा रहे हैं, वहीं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि क्या अब भारत को प्रदूषण फैलाने वालों पर प्रत्यक्ष आर्थिक दंड लगाने-अर्थात् विस्तृत प्रदूषण कर लागू करने-की आवश्यकता है?

प्रदूषण कर का विचार नया नहीं, परन्तु इसकी आवश्यकता आज पहले से कहीं अधिक है। अर्थशास्त्र में यह माना जाता है कि जब कोई उद्योग, वाहन या गतिविधि प्रदूषण फैलाती है तो उसका दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगाना पड़ता है, न कि केवल उसे जो प्रदूषण फैला रहा है। यह बाजार व्यवस्था की वह गंभीर विफलता है जिसे बा लागत कहा जाता है-अर्थात् नुकसान तो समाज को होता है, पर उसका फैला न उस वस्तु की कीमत में जुड़ता है, न ही प्रदूषण फैलाने वाला उसे भरता है। ऐसे

में प्रदूषण कर इसी असंतुलन को सुधारने का प्रयास करता है, जहाँ जो जितना अधिक प्रदूषण फैलाए, वह उतनी अधिक आर्थिक कीमत चुकाए। भारत में कोयले पर लगाया गया 'स्वच्छ ऊर्जा उपकर' इसका एक प्रारंभिक स्वरूप था, परंतु आज देश में वायु, जल, ध्वनि, ठोस कचरा और औद्योगिक उत्सर्जन का ऐसा मिश्रित संकेत है कि केवल किसी एक क्षेत्र पर कर लगाना पर्याप्त नहीं। आवश्यकता एक सर्वसमावेशी और वैज्ञानिक पद्धति से तैयार प्रदूषण कर की है, जो प्रदूषण को कम करने और स्वच्छ विकल्पों को बढ़ावा देने में सहायक हो। प्रदूषण कर का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह प्रदूषण को महंगा बनाता है और स्वच्छता को सस्ता। जब किसी उद्योग को प्रति इकाई उत्सर्जन पर कर देना पड़ेगा, तो वह स्वाभाविक रूप से ऐसी तकनीक अपनाने की ओर अग्रसर होगा जो कम प्रदूषण करे। यूरोप जैसे क्षेत्रों में यह प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है जहाँ कार्बन-आधारित दंड के बाद ऊर्जा-संरक्षण और हरित तकनीक का उपयोग अत्यधिक बढ़ा। भारत में भी यह परिवर्तन संभव है, बशर्ते नीति दीर्घकालिक, पारदर्शी और लक्ष्य-उन्मुख हो। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि भारत को आने वाले वर्षों में पर्यावरण-रक्षा और स्वच्छ ऊर्जा पर बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होगी। नदियों की सफाई, स्वच्छ परिवहन व्यवस्था, नवीकरणीय ऊर्जा, प्रदूषण नियंत्रण उपकरण, ठोस कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन तथा हरित भवनों के विकास पर अत्यधिक वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होगी। ऐसे में प्रदूषण कर एक स्थायी और अनुमानित राजस्व स्रोत बन सकता है, जिसे एक स्वतंत्र हरित निधि के माध्यम से केवल पर्यावरण संरक्षण पर व्यय किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर भी प्रदूषण कर का महत्व बढ़ रहा है। कई विकसित देश अब उन आयातित वस्तुओं पर

अतिरिक्त शुल्क लगा रहे हैं जो अधिक प्रदूषणकारी स्रोतों से बनती हैं। यदि भारत घरेलू स्तर पर प्रदूषण पर उचित कर लागू करता है, तो भारतीय निर्यातकों को विदेशी बाजारों में अतिरिक्त शुल्क से राहत मिल सकती है। इस प्रकार प्रदूषण कर केवल पर्यावरण निभ में नहीं, बल्कि भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धा की रक्षा में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। परंतु इन सबके बीच सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रदूषण कर गरीबों पर भारी पड़ सकता है? यह चिंता बिल्कुल वास्तविक है। यदि ईंधन और बिजली की लागत बढ़ेगी, तो उसके साथ ही परिवहन, खाद्य पदार्थ और आवश्यक वस्तुओं की कीमतें भी बढ़ सकती हैं। इसका सीधा प्रभाव निम्न-आय वर्ग पर पड़ता है, जिनके पास विकल्प सीमित होते हैं। इसलिए प्रदूषण कर को न्यायपूर्ण बनाने के लिए यह अनिवार्य होगा कि निम्न-आय वाले परिवारों को प्रत्यक्ष नुकद सहायता, ऊर्जा सब्सिडी और रसोई गैस जैसी आवश्यकताओं पर राहत दी जाए। उद्योग जगत की चिंताएँ भी कम नहीं। विशेषकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग ऊर्जा-प्रधान होते हैं और किसी भी अतिरिक्त कर का प्रभाव उनकी लागत पर पड़ता है। अतः प्रदूषण कर को चरणबद्ध ढंग से लागू करना होगा-पहले बड़े उद्योगों पर, फिर धीरे-धीरे छोटे उद्योगों को तकनीकी और वित्तीय सहायता के साथ इस दायरे में लाना होगा। हरित मशीनरी पर अनुदान, ब्याज रहित ऋण, और तकनीकी उत्पन्न के लिए मार्गदर्शन इस परिवर्तन की सुगम बना सकते हैं। भारत की प्रशासनिक क्षमता भी एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रदूषण का सटीक मापन, डेटा की विश्वसनीयता और निगरानी तंत्र की पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक होगी। छोटे उद्योगों और गैर-प्रमाणित स्रोतों की निगरानी आज भी चुनौतीपूर्ण है। यदि उत्सर्जन मापन ही विश्वसनीय न हो, तो कर प्रणाली पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इसलिए भारत को

आधुनिक सेंसर-तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी, डिजिटल उत्सर्जन-पंजीकरण तथा रियल-टाइम निगरानी प्रणाली को मजबूत करना होगा। इसके अतिरिक्त, प्रदूषण कर की सफलता इस बात पर भी निर्भर करेगी कि सरकार इसके राजस्व का उपयोग कहाँ करती है। यदि यह धन सामान्य बजट में विलीन हो गया, तो जनता में अविश्वास बढ़ेगा और नीति का उद्देश्य कमजोर पड़ेगा। इसके लिए एक स्वतंत्र हरित कोष का गठन आवश्यक है, जो केवल प्रदूषण नियंत्रण, स्वच्छ ऊर्जा, हरित परिवहन और पर्यावरण संरक्षण के कार्यों पर व्यय हो तथा जिसकी वार्षिक लेखा-परीक्षा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो। किसी भी प्रकार की मूल्य-वृद्धि जनता के बीच असंतोष उत्पन्न कर सकती है। परंतु यह भी सत्य है कि पर्यावरणीय संकेत अब इतना गंभीर हो चुका है कि उससे निपटने के लिए कठोर, दीर्घकालिक और दूरदर्शी आर्थिक सुधार आवश्यक हैं। भारत की युवा पीढ़ी सुरक्षित जल, स्वच्छ वायु और स्वस्थ जीवन की मांग कर रही है। इस मांग को नजरअंदाज करना अब संभव नहीं। अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रदूषण कर भारत के लिए केवल राजस्व-संग्रह का साधन नहीं, बल्कि एक व्यापक हरित परिवर्तन की दिशा में आवश्यक कदम है। इसे न्यायपूर्ण, पारदर्शी, चरणबद्ध और वैज्ञानिक आधार पर लागू करने से भारत न केवल प्रदूषण कम कर पाएगा, बल्कि अपने विकास मॉडल को भी टिकाऊ, स्वस्थ और पर्यावरण-सम्मत बना सकेगा। यदि इसे सही नीतिगत ढंग से लागू किया गया, तो यह भारत के इतिहास में वह मोड़ साबित हो सकता है जहाँ देश ने आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संरक्षण को एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी सिद्ध किया।

सेवास्तंभ जिला इकाई रेवाड़ी द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

भीम प्रज्ञा न्यूज़ रेवाड़ी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर पार्क एवं लाइब्रेरी, मॉडल टाउन, रेवाड़ी स्थित सेवास्तंभ कार्यालय में आज सेवानिवृत्त कर्मचारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सेवास्तंभ जिला इकाई रेवाड़ी के प्रधान एवं केन्द्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ उपप्रधान भगत सिंह बोद्ध ने की। बैठक में उन्होंने केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तावित आठवें वेतन आयोग से सेवानिवृत्त कर्मचारियों को वंचित रखने की संभावित मंशा पर गम्भीर चिंता व्यक्त की तथा सभी से इस निर्णय का पुरजोर विरोध करने का आह्वान किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में निम्न प्रमुख बिंदुओं पर जोर दिया- टर्म्स ऑफ़ रिफ़रेंस में मौजूद अनफंडेड और नॉन-कंट्रीब्यूटरी जैसे शब्द हटाए जाएं, आयोग की चर्चाओं में सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए, लगभग 10 लाख करोड़ रुपये के पेंशन कोष को सुरक्षित रखा जाए और इसका उपयोग केवल पेंशन



भुगतान के लिए किया जाए, तथा फाइनंस एक्ट 2025 की विवादित धाराओं को रद्द किया जाए। उनके इन विचारों का बैठक में उपस्थित सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने सर्वसम्मति से समर्थन दिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से प्रधान आर. डी. शर्मा, आचार्य कांशी राम (महासचिव), पूर्व खण्ड शिक्षा अधिकारी एडवोकेट राज कुमार 'जलवा', पूर्व प्राचार्य धर्मपाल सिंह, राम सिंह (पूर्व डिप्टी कमिंडेंट), सत्यपाल सिंह, सत्यवीर सिंह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

मंत्री आरती राव ने मेडिकल कालेज में बनने वाले अस्पताल का नामकरण शहीद राव तुलाराम करवाया

6 माह से चल रहे धरने का समाप्त करवा कर अपने राजनीतिक परिपक्व होने का परिचय दिया है-दिनेश जेलदार व विकास चेयरमैन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडी अटेली?।

मनोज बुलाण । मंत्री आरती राव की मांग पर कोरियावास मेडिकल अस्पताल का नामकरण शहीद राव तुलाराम की घोषणा मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मुख से करवा कर स्वास्थ्य मंत्री ने लोगों की मांग को उठा कर लंबे समय से चले आ रहे धरने का समाप्त करवा दिया है। नामकरण को लेकर स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह ने मंच पर सीएम के सामने मांग रखी थी। इसके बाद सीएम नायब सैनी ने कोरियावास मेडिकल अस्पताल का नाम शहीद तुलाराम के नाम पर रखने की 16 नवंबर को सीएम नायब से घोषणा करवा कर अपनी राजनीतिक सुझबुझ का परिचय दिया है। यह बात मार्केट कमेट्री चेयरमैन दिनेश जेलदार व नपा के पूर्व चेयरमैन विकास यादव ने प्रेस को जारी एक बयान में बताया कि स्वास्थ्य मंत्री ने मेडिकल कालेज के नामकरण को लेकर कई माह से कर रहे धरने का समाप्त करवा कर अपने राजनीतिक परिपक्व होने का परिचय दिया है। सीएम रैली के



बाद स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव धरना स्थल पर पहुंची तथा नामकरण को लेकर करीब छः माह से ग्रामीण धरने पर बैठे हुए लोगों को उनकी मांग पर कालेज के अंदर अस्पताल का नामकरण शहीद राव तुलाराम करने की घोषणा के बारे में अवगत कराया। स्वास्थ्य मंत्री के आश्वासन पर छः माह धरने पर बैठे लोगों ने अपना धरना समाप्त कर दिया। जिसके नामकरण को लेकर मई माह से कोरियावास के ग्रामीण मुख्य द्वार के सामने धरने पर बैठे हुए तथा अनेक गांवों से भी लगातार समर्थन मिल रहा था। इसको



लेकर ग्रामीणों ने लघु सचिवालय तक रोष मार्च भी निकाला था। चेयरमैन दिनेश जेलदार व नपा चेयरमैन विकास यादव ने बताया कि अब मांग पूरी होने के बाद ग्रामीणों ने धरना समाप्त कर दिया है। इस कार्य के लिए स्वास्थ्य मंत्री के कार्य को लेकर जिले के लोगों में खुशी का माहौल है। बता दें कि कोरियावास गांव में करीब 750 करोड़ रुपये की लागत से नया मेडिकल कॉलेज बना है। जिसमें स्वास्थ्य मंत्री के प्रयासों की कक्षाएं शुरू होने के साथ मेडिकल की सीटों की संख्या भी बढ़ी है।

राजस्थान में जल संरक्षण के लिए अंबुजा फाउंडेशन को राष्ट्रीय जल पुरस्कार



भीम प्रज्ञा न्यूज़.नई दिल्ली।

अंबुजा फाउंडेशन को राजस्थान में जल संरक्षण, सामुदायिक सहयोगिता और टिकाऊ जल प्रबंधन मॉडल के सफल उक्रियान्वयन के लिए जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित (वे राष्ट्रीय जल पुरस्कार में 'बेस्ट सिविल सोसायटी' श्रेणी में द्वितीय स्थान प्रदान किया गया है। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान संस्था को 18 नवंबर 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की अध्यक्षता में कैबिनेट जल शक्ति मंत्री जी. अज. पानीफ द्वारा प्रदान किया गया। 12 वर्षों से राजस्थान में जल संरक्षण के क्षेत्र में अंबुजा फाउंडेशन द्वारा किए गए तकनीकी, सामुदायिक-भागीदारी और प्रभावी

कार्यों के महत्व को आधार पर यह पुरस्कार दिया गया है। अंबुजा फाउंडेशन द्वारा पिछले दो दशकों में राजस्थान में 19,000 से अधिक जल संरचनाओं का निर्माण किया गया है, जिसके माध्यम से लगभग 2,138 करोड़ लीटर वर्षा जल संचित (हार्वैस्ट) किया जा रहा है। संस्था ने वर्षा जल संचयन में अग्रणी प्रदेश में जल पुनर्भरण, व्यावहारिक सुविधाओं के विस्तार और जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में दीर्घकालिक तथा टिकाऊ समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले दो दशकों में, फाउंडेशन ने राजस्थान के 14 जिलों में वर्षा जल संचयन, पारंपरिक जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करने, घरेलू स्तर पर जल पुनर्भरण, पाइपलाइन जल आपूर्ति को सुदृढ़ करने, प्राकृतिक संसाधनों के विकास, जल धाराओं को पुनर्जीवन, जल

गुणवत्ता संरक्षण, जल स्तर सुधारण और व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहित करने में निणायक भूमिका निभाई है। संगठन का जन-भागीदारी आधारित मॉडल आज राज्य के अनेक क्षेत्रों में जल-संकट के स्थायी समाधान की दिशा में क्रांतिकारी कदम है।राजस्थान में लंबे समय से चली आ रही जल कमी और अनियमित वर्षा जैसी चुनौतियों के बीच अंबुजा फाउंडेशन के सतत प्रयासों ने हजारों परिवारों और सैकड़ों गांवों को जल-समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों को मिलाकर निर्मित जल प्रबंधन मॉडल ने जल संरचनाओं की स्थिरता और प्रभावशीलता को बढ़ाया है।

अंबुजा फाउंडेशन के जल संरक्षण एवं संवर्धन कार्यक्रम के प्रमुख परिणाम

11,886 व्यक्तिगत छत वर्षा जल संचयन टांके 202 सामुदायिक छत वर्षा जल संचयन टांके 826 फार्म टांके 622 पारंपरिक तालाबों का जीर्णोद्धार 62 खड्डों और वेस्ट विपर निर्माण 71 चेक डैम 703 खेत तालाई (फार्म पॉन्ड) 17 डाईकस निर्माण 502 हैंडपंपों का जीर्णोद्धार 187 टयुबवेल/ओपन-वेल पुनर्जीवन 1663 हेक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई 22889 हेक्टेयर क्षेत्र में स्प्रिंकलर सिंचाई इन प्रयासों से जल संचयन क्षमता में वृद्धि हुई है, किसानों की सिंचाई लागत कम हुई है, कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है और कई गांवों को जल-सुरक्षित ग्राम के रूप में स्थापित किया गया है।

राजस्थान में अंबुजा फाउंडेशन के जल प्रबंधन कार्यों का व्यापक दायरा

14 जिलों में कार्य 22 विकास खंडों में कार्यक्रम 113 ग्राम पंचायतों में सक्रिय उपस्थिति 334 गांवों में जल संरक्षण गतिविधियाँ 1,52,851 परिवारों को लाभ 7,82,503 की आबादी को प्रत्यक्ष लाभ 2,00,000 से अधिक पशुओं को लाभ ये आंकड़े दर्शाते हैं कि अंबुजा फाउंडेशन का जल प्रबंधन मॉडल राज्य में गहरे प्रभाव के साथ लागू हुआ है और जल-सुरक्षा के स्थायी समाधान की दिशा में आगे बढ़ रहा है। अंबुजा फाउंडेशन ने इस सम्मान को राजस्थान की ग्रामीण आबादी, साझेदार संस्थानों, सरकारी विभागों और ग्राम नेतृत्व के सहयोग को समर्पित करते हुए कहा कि यह उपलब्धि सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

अंबुजा फाउंडेशन के जलसंचय मैनेजर और राजस्थान राज्य प्रमुख मनोज अग्रवाल ने इस उपलब्धि को संगठन और समुदाय की साझा जीत बताया हुए कहा, 'यह सम्मान हमारे सतत प्रयासों, टीम की प्रतिबद्धता और ग्रामीण समुदायों व साझेदारों की सहभागिता का परिणाम है। जल संसाधन भारत और राजस्थान दोनों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, और हम सभी मिलकर जल संरक्षण के कार्य को आगे बढ़ाते रहेंगे। हम राजस्थान में जल-सुरक्षा, कृत्रिम जल प्रबंधन और नवाचार आधारित समाधानों को और विस्तार देने के लिए पूरे समर्पण के साथ कार्य करते रहेंगे, ताकि हर गांव जल-समृद्ध और आत्मनिर्भर बन सके।'

सोमानी कॉलेज में NCC कैडेट्स ने निकाली 'स्वच्छ भारत' रैली, कौमी एकता की शपथ भी ली

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चिड़वा।

सोमानी एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित चिड़वा कॉलेज के बुधवार को राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) के कैडेट्स ने स्वच्छ भारत अभियान के तहत एक व्यापक जागरूकता रैली का आयोजन किया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. ऋचा कुलश्रेष्ठ ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित यह रैली कॉलेज परिसर से शुरू होकर शहर के मुख्य बाजार, विवेकानंद चौक, उपखंड कार्यालय और शेखसरिया कॉलेज होते हुए वापस महाविद्यालय पहुंची। इस दौरान कैडेट्स ने स्वच्छता के नारे लगाकर आम जनता को सफाई के



महत्व से अवगत कराया। रैली के समापन पर, विभिन्न वक्ताओं ने स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्यों और उसके सामाजिक प्रभाव के संबंध में विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, महाविद्यालय में कार्यशील राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में कौमी एकता सप्ताह के अंतर्गत एक विशेष शपथ

कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में व्याख्याता कुलदीप भगत ने विद्यार्थियों को आह्वान और लोकतंत्र संबंधी महत्वपूर्ण शपथ दिलाई। इस अवसर पर व्याख्याता इनिका जांगिड, नवनीत शर्मा, अभिषेक सैनी, दिनेश चौधरी सहित महाविद्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

भगवान श्री राम जन्मभूमि मंदिर ध्वजारोहण प्रतिष्ठा समारोह 25 को, हिसार से दो संतों सहित चार हस्ती बनेगी भागीदार

भीम प्रज्ञा न्यूज़.हिसार।

विजय रंगा (ब्यूरो चीफ) । श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास, अयोध्या द्वारा श्री राम जन्मभूमि मंदिर ध्वजारोहण समारोह 25 नवंबर को आयोजित किया जाएगा। यह आयोजन श्री राम विवाह पंचमी के दिन हो रहा है। इस आयोजन में भाग लेने के लिए देश भर के प्रमुख साधु संतों को विश्व हिंदू परिषद धर्म प्रसार के माध्यम से निमंत्रण दिया गया है। यह जानकारी देते हुए विहिप धर्म प्रसार के संत संपर्क सह प्रमुख संजीव कुमार चौहान ने बताया कि इस आयोजन में भाग लेने के लिए हरियाणा के नौ साधु संतों को निमंत्रण पत्र दिया गया है।

लालपुरा धाम हांसी के सह- संचालकपरम श्रद्धेय स्वामी श्री विध्यानंदजी महाराज को विशेष निमंत्रण पत्र दिया गया



इसी के तहत आज परम श्रद्धेय स्वामी श्री विघ्यानंद जी महाराज लालपुरा, हांसी को निमंत्रण पत्र दिया गया। उन्होंने बताया कि इस

सम्पर्क संजीव चौहान व विकास शर्मा 23 नवंबर को अयोध्या के लिए रवाना होंगे। प्रांत सह प्रमुख संत सम्पर्क संजीव चौहान ने बताया कि ध्वजारोहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व आरएसएस के सर संचालक डा. मोहन भागवत सरसंघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर कमलों द्वारा किया जाएगा। इस पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, उत्तर

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, महंत नृत्यगोपाल दास अध्यक्ष कोषाध्यक्ष, स्वामी गोविंद देव गिरि, जगतगुरु शंकराचार्य वासुदेव नंद सरस्वती सहित भारत वर्ष से सैकड़ों संत महात्मा आदि मौजूद रहेंगे। निमंत्रण देने के दौरान प्रांत प्रमुख धर्म प्रसार राजेश, पारवर्तन प्रमुख नरेंद्र, प्रांत कार्याकारणी सदस्य प्रेम किंगर, हांसी जिला प्रमुख प्रवीण लालपुरा उपस्थित रहे।

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण: ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार का नया अवसर

भीम प्रज्ञा न्यूज़.नीमराना।

रमेशचंद्र । खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार, राज्य कार्यालय जयपुर द्वारा संचालित हनी मिशन के अंतर्गत 10 दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम के 20 प्रशिक्षुओं को बुधवार को नीमराना (अलवर) स्थित वैदिक पुष्प रस नेचुरल हनी प्लांट की शैक्षणिक एक्सपोजर विजिट करवाई गई। यह विजिट युवा जागृति संस्थान, बानसूर (चंदवाली रोड, प्रभु भवन) द्वारा आयोजित प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा रही। विजिट के दौरान प्रशिक्षुओं को प्राकृतिक शहद उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया का लाइव डेमो दिखाया गया। विशेषज्ञों ने अजवाइन, सौंफ, सरसों कीम और मल्टी-फ्लोरा के शहद बनाने की वैज्ञानिक विधियों विस्तार से समझाईं। प्लांट संचालकों ने बताया कि यहाँ शहद स्रोथ छत्तों से निकालकर बिना गर्म किए और बिना किसी रासायनिक प्रसंस्करण के भरा जाता है, जिससे शहद के एंजाइम, एंटीऑक्सीडेंट और पोषक तत्व पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं। विशेषज्ञों ने मधुमक्खी की प्रमुख प्रजातियों एपिस मैलिफेरा और एपिस सेरेना (देसी) के बीच अंतर बताते हुए समझाया कि देसी मधुमक्खी का शहद



आयुर्वेद में औषधीय उपयोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। साथ ही उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन से प्राप्त बी वैक्स, रॉयल जेली, बी पोलन, प्रोपोलिस और मधुमोम जैसी वस्तुएं दवाइयों, कॉस्मेटिक्स व हर्बल उद्योग में बड़ी मात्रा में उपयोग होती हैं। युवा जागृति संस्थान के सीईओ डॉ. गोकुलचंद्र सैनी ने कहा कि इस विजिट का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को व्यवहारिक अनुभव देना, आधुनिक तकनीकों से जोड़ना और उन्हें भविष्य में अपना स्वयं का उद्यम स्थापित करने के

लिए प्रेरित करना है, जिससे ग्रामीण स्तर पर रोजगार, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है।प्रशिक्षण में शामिल प्रतिभाषि हेमंत कुमार सैनी, राकेश कुमार सैनी, कैलाश चंद सैनी,महेंद्र कुमार, विजयपाल यादव, मुकेश कुमार सैनी, नितीश यादव, नरेंद्र कुमार, महेंद्र सिंह, सोमवीर सिंह, हेमंत, कृष्णानंद सिंह चौहान, नरेश सिंह, टिल्लू सिंह, अंकुर, विजय कुमार, अनिल कुमार, भीम सिंह सैनी, विपिन शर्मा, राहुल शर्मा आदि उपस्थित हुए।

चिड़वा में अंतर महाविद्यालय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता संपन्न

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चिड़वा।

गिन्नी देवी सत्यनारायण सेखसरिया गर्ल्स पीजी कॉलेज, चिड़वा में अखिल राजस्थान अंतर महाविद्यालय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉक्टर सपना अग्रवाल ने आगतुक अतिथियों का परिचय कराया। इस प्रतियोगिता का विषय 'पारंपरिक शिक्षण विधियों की कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ई) संचालित शिक्षा के साथ पूरक किया जाना चाहिए' रखा गया था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था सचिव सुंदरलाल शर्मा ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विषय की व्यापकता बताते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ई) को एक ज्वलंत समस्या बताया। निर्णायक मंडल में डॉक्टर पूनम शर्मा (सह आचार्य, राजकीय महाविद्यालय मलसीसर), सुमित्रा स्वामी (प्राचार्य, राजकीय सैनीयर सेकेंडरी स्कूल गाडाखेड़ा) और बंशीलाल शर्मा (सहायक आचार्य, मोतीलाल



विजेता टीमें:

चलवैजयंती (ट्राफी) और प्रथम पुरस्कार: जे. बी. शाह गर्ल्स पीजी कॉलेज, झुझुनू।

द्वितीय पुरस्कार: इंद्रमणि मंडेलिया शिक्षा निकेतन, पिलानी।

तृतीय पुरस्कार: सेठ जीबी पोद्दार कॉलेज, नवलगढ़।

विजेताओं को ट्रॉफी और नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रबंध समिति सदस्य पूर्व प्राचार्य डॉक्टर एन एल अडावतिया, सतीश शर्मा, विष्णु प्रसाद सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम संयोजक ने अंत में आगतुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कॉलेज झुझुनू) शामिल थे। संचालन मंडल में पूनम भारद्वाज, लोकेश कंवर और डॉक्टर अदिति शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम संयोजक

एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान समारोह

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चिड़वा

झुझुनू रोड स्थित एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन द्वारा संचालित एम. डी. सी. एल. फाउंडेशन क्लासेज में बुधवार को नीट (NEET) और जे.ई.ई. (JEE) डिवीजन के मेधावी विद्यार्थियों के लिए एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। यह समारोह उन छात्रों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया, जिन्होंने हाल ही में आयोजित माइनर और मेजर टेस्ट में सर्वश्रेष्ठ रैंक हासिल की है। सम्मान समारोह का विधिवत शुभारम्भ एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन के चेयरमैन सुनील कुमार डांगी, मैनेजिंग डायरेक्टर समित डांगी और अन्य मैनेजमेंट सदस्यों ने किया।

समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉज मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। जे.ई.ई. डिवीजन के 'युरेका' वर्ग में तनीष अग्रवाल, विशाल, भव्य शर्मा और प्रिया सैनी ने टॉप रैंक



प्राप्त की, जबकि 'जेनिथ' वर्ग में ऋषभ स्वामी, मयंक यादव और हिमांशु सैनी को सम्मानित किया गया। 'पायोनियर' वर्ग में मयंक और

कृष्णा वर्मा को प्रमुख रूप से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार, नीट डिवीजन के 'लाइफ लाइन' वर्ग में गौरव शर्मा, रोहित नारनलिया,

जानवी, कोमल सैनी, इशा और चेतना वर्मा को सम्मानित किया गया। 'जैनेसिस' वर्ग में आदित्य गुरावा और धीरेन तंवर को, और 'संजीवनी' वर्ग में पलक जांगिड और इशांत सैनी को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन के चेयरमैन सुनील कुमार डांगी ने सभी सम्मानित विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति और नैतिक मूल्यों के प्रति भी जागरूक होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन राजस्थान में अपनी श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने की परम्परा के लिए जाना जाता है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि इस तरह के सम्मान समारोह से छात्रों में आत्मविश्वास, लक्ष्य के प्रति दृढ़-संकल्पिता, बौद्धिकता और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। इस मौके पर एम. डी. गुप ऑफ एजुकेशन के समस्त सदस्य उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त पर उपमंडल स्तरीय कार्यक्रम आयोजित

प्रधानमंत्री का संकल्प-देश का किसान बने मजबूत, खुशहाल और समृद्ध : देवेन्द्र सिंह बबली

पूर्व मंत्री बबली ने किसानों को फसल चक्र अपनाने व बागवानी की ओर बढ़ने के लिए किया प्रेरित

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना/कुला।

रजत विजय रंगा । प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशभर के किसानों के लिए जारी की गई 21वीं किस्त के अवसर पर धारसूल पैक्स में उपमंडल स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व विकास एवं पंचायत मंत्री देवेन्द्र सिंह बबली मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे और उपस्थित किसानों तथा ग्रामीणों को संबोधित किया। कार्यक्रम में तमिलनाडु के कोयंबटूर से आयोजित प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी देखा व सुना गया। प्रधानमंत्री ने एक क्लिक बटन से देशभर के किसानों के खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की राशि हस्तांतरित की। पूर्व मंत्री देवेन्द्र सिंह बबली ने इस अवसर पर कहा कि 1 फरवरी 2020 को प्रारंभ की गई प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना किसानों को निरंतर आर्थिक संबल प्रदान कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प है कि देश का किसान मजबूत, खुशहाल और समृद्ध बने, क्योंकि जब किसान समृद्ध होता है, तभी राष्ट्र प्रगति करता है। इसी भावना से केंद्र सरकार लगातार कृषि हितैषी योजनाओं का



दायरा बढ़ा रही है। उन्होंने बताया कि आज जारी की गई योजना की 21वीं किस्त से देशभर के 15,81,908 किसान लाभान्वित होंगे। फतेहाबाद जिले के करीब 70 हजार किसान और टोहाना क्षेत्र के लगभग 25 हजार किसान इस किस्त के पात्र हैं। बबली ने कहा कि वे स्वयं किसान परिवार से आते हैं, इसलिए किसानों की कठिनाइयों, संघर्ष और जरूरतों को करीब से समझते हैं। उन्होंने बताया कि लगभग दस वर्ष पूर्व क्षेत्र में नरमा,

चना, सरसों, धान और गेहूं सहित विविध फसलों के साथ फसल चक्र का व्यापक रूप से पालन किया जाता था, परंतु समय के साथ कुछ फसलों का रकबा घट गया है। उन्होंने बताया कि उनके गांव में लगभग 300 एकड़ में बागवानी को अपनाया गया है, जो किसानों के लिए लाभदायक मॉडल साबित हो रहा है। उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि भूमि की उर्वरता बनाए रखने और भविष्य की खेती को सुरक्षित करने के लिए फसल

चक्र अपनाना अत्यंत आवश्यक है। धान की पैदावार में कमी और भूजल स्तर में लगातार से पालन किया जाता था, परंतु समय के साथ फसलों का रकबा घट गया है। उन्होंने बताया कि उनके गांव में लगभग 300 एकड़ में बागवानी को अपनाया गया है, जो किसानों के लिए लाभदायक मॉडल साबित हो रहा है। उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि भूमि की उर्वरता बनाए रखने और भविष्य की खेती को सुरक्षित करने के लिए फसल

उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे धीरे-धीरे जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाएं। एक या दो एकड़ भूमि में जैविक खेती शुरू कर इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार हर परिस्थिति में किसानों के साथ खड़ी है और एमएसपी, फसल बीमा योजना तथा प्राकृतिक आपदाओं में राहत सहायता जैसे अनेक माध्यमों से किसानों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है। पूर्व मंत्री बबली ने क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में क्षेत्र में जोड़ड़, लाइब्रेरी, जिम, सड़क निर्माण और जलघर जैसी अनेक मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई थीं। अब मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी उस विकास यात्रा को आगे बढ़ाते हुए नागरिक सुविधाओं को मजबूत करने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में तहसीलदार सन्नी दलाल, एसडीओ मुकेश मेहला, चेयरमैन जगजीत हुड्डा, विकास ललौदा, किरण शर्मा, सरपंच बिंदू, प्रवीन गिल, सरपंच कुलदीप सिंह, जगसीर सिंह, एसएमएस अजय दिल्ली, संजय सेलवाल, सुपरवाइजर रोशन लाल सहित बड़ी संख्या में किसान, पंचायत प्रतिनिधि और गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

फतेहाबाद पुलिस की सोशल मीडिया पर सख्त कार्रवाई: 5 फॉलोअर्स को कराया अनफॉलो और ब्लॉक



भीम प्रज्ञा न्यूज़.फतेहाबाद। रजत विजय रंगा । पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशों के तहत फतेहाबाद पुलिस ने सोशल मीडिया पर अपराध को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों पर कड़ी निगरानी और कार्रवाई की। जानकारी देते हुए सोशल मीडिया प्रभारी उपनिरीक्षक अशोक कुमार ने बताया कि इस कार्रवाई के तहत इंस्टाग्राम आईडी vikram bhambhu 005 को फॉलो करने वाले कुल 5 युवकों को अपराध जांच शाखा फतेहाबाद में बुलाया गया। जांच के दौरान इन युवकों ने अपनी आईडी के माध्यम से सदिग्ध अकाउंट को अनफॉलो और ब्लॉक कर दिया। उनके बयान दर्ज किए गए और अकाउंट से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की गई। हाज़िर हुए युवकों का संबंध खारा खेड़ी और भद्र (भुना) क्षेत्रों से है। पुलिस ने इन युवकों को सोशल मीडिया पर अपराध से जुड़े कंटेंट के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया। साथ ही उनसे कहा गया कि वे अपने गांव और आसपास के अन्य युवाओं को भी ऐसे अकाउंट्स से सतर्क रहने और जागरूक करने के लिए प्रेरित करें।

पुलिस की चेतावनी: फतेहाबाद पुलिस ने स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया पर अपराध या अपराधियों का समर्थन करने वालों पर लगातार कड़ी नजर रखी जा रही है। ऐसे व्यक्तियों के खिलाफ नियमों के अनुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस का यह कदम डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपराध रोकने और युवाओं को सुरक्षित और जागरूक रखने के लिए एक स्पष्ट संदेश है।

पलवल में नाबालिग दलित किशोर बालक राहुल का पार्टी के बहाने बुलाकर किया कत्ल

बहरहमी से खम्भे से बांध कर पीटा ,बाद में अस्पताल में घायल ने तोड़ा दम



भीम प्रज्ञा न्यूज़.पलवल।

विजय रंगा (ब्यूरो चीफ) । पलवल जिले के गाँव खम्बे, के एक 16 वर्षीय राहुल पुत्र विजय सिंह , जो जाटव जाति से संबंध रखता था, उसकी उपचार के दौरान दुःखद मृत्यु हो गई। यह वही पीड़ित किशोर बालक था जिसे उसके कुछ परिचित लड़कों ने पार्टी

पुलिस प्रशासन भीम आर्मी (लीगल विंग)के पदाधिकारियों के हस्तेक्षेप के बाद आया हरकत में, किया आरोपियों को गिरफ्तार

के बहाने बुलाकर, खम्भे से बाँधकर अमानवीय तरीके से पीटा व बुरी तरह से प्रताड़ित किया जिस पर वह घायल हो गया।घायल अवस्था में परिजनों ने अस्पताल में भर्ती कराया परंतु पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की जिस पर पलवल के भीम आर्मी लीगल विंग के वरिष्ठ नेता व जिला अध्यक्ष एडवोकेट शैलेन्द्र जोहरी व भीम आर्मी लीगल विंग के प्रदेशाध्यक्ष एडवोकेट ध्रुव कुमार फरीदाबाद के हस्तक्षेप के बाद स्थानीय पुलिस हरकत में आई और पुलिस कार्यवाही के लिए तैयार हुई। मरने से पूर्व पीड़ित ने स्वयं दिनांक 09/11/2025 को थाना कैप पलवल में लिखित शिकायत दी थी, परंतु साहू कैप द्वारा न तो कोई कार्रवाई की गई और न ही एफ आई आर दर्ज की गई। यह पुलिस प्रशासन की गंभीर लापरवाही को दर्शाता है। राहुल की मृत्यु के बाद, भीम आर्मी व आज़ाद समाज पार्टी पलवल की टीम तत्काल मौके पर पहुंची और पीड़ित परिवार से

बातचीत कर पुलिस प्रशासन पर एफआईआर दर्ज करवाने का दबाव बनाया। इसके बाद थाना कैप, पलवल में एफ आई आर संख्या 764/2025 दर्ज करवाई गई, जिसमें गंभीर धाराओं में मामला दर्ज हुआ . यह कार्रवाई प्रदेश अध्यक्ष लीगल सेल भीम आर्मी व आज़ाद समाज पार्टी हरियाणा, एडवोकेट ध्रुव कुमार के निर्देश पर की गई।मौके पर भीम आर्मी लीगल सेल टीम से:जिला अध्यक्ष एडवोकेट शैलेन्द्र जोहरी एडवोकेट अनिल जोहरी एडवोकेट विनय गौतम मौजूद रहे।साथ ही आज़ाद समाज पार्टी से जिला सचिव सागर सुजवारी घटनास्थल पर उपस्थित रहे और पूरी टीम ने मिलकर पुलिस प्रशासन से आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करवाई। भीम आर्मी एवं आज़ाद समाज पार्टी यह स्पष्ट करती है कि दलित समाज पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई लगातार जारी रहेगी, और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी।

श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी वर्ष पर शहीदी यात्रा का टोहाना उपमंडल में हुआ भव्य, ऐतिहासिक और गरिमामय स्वागत

भीम प्रज्ञा न्यूज़.कुला/टोहाना।

रजत विजय रंगा । श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी वर्ष के उपलक्ष्य में निकाली जा रही ऐतिहासिक शहीदी नगर कीर्तन यात्रा का आज टोहाना उपमंडल में अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और गरिमामय ढंग से स्वागत किया गया। यह यात्रा रतिया उपमंडल के गांव नधवान में रात्रि विश्राम के बाद प्रातः रवाना हुई और सबसे पहले नन्हेंडी गांव पहुंची, जहां स्थानीय संगत, धार्मिक संस्थानों और ग्रामीणों ने पुष्पवर्षा के साथ यात्रा का अत्यंत भव्य स्वागत किया। यात्रा जब नन्हेंडी से आगे बढ़ी तो कुला और लहरियाँ गांवों में भी श्रद्धालुओं और संगत ने गुरु साहिब के पावन स्वरूप के दर्शन कर फूलों की वर्षा की तथा सेवा-सत्कार द्वारा अपनी श्रद्धा प्रकट की। विभिन्न स्थानों पर लंगर, जल सेवा, प्रसाद वितरण और विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की बड़ी संख्या यात्रा के दर्शन के लिए मार्ग में उपस्थित रही। श्री गुरु तेग बहादुर जी के अद्वितीय बलिदान और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने वाली यह शहीदी यात्रा प्रदेश के विभिन्न जिलों से होते हुए 25 नवंबर को कुरुक्षेत्र में आयोजित राज्य स्तरीय समापन समारोह में पहुंचेगी। यात्रा के टोहाना उपमंडल में आगमन के अवसर पर अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता और धार्मिक संगठनों ने यात्रा का स्वागत किया। पूर्व कैबिनेट मंत्री देवेन्द्र सिंह



बबली, टोहाना विधायक परमवीर सिंह, हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग के चेयरमैन ओ. रविंद्र सिंह बलियाल, रतिया एसडीएम सुरेंद्र सिंह, तहसीलदार सन्नी दलाल, नायब तहसीलदार अंजू, वरिष्ठ नेता संजय रेवड़ी, पूर्व जिलाध्यक्ष बलदेव सिंह गोहा, विकास ललौदा, चेयरमैन जगजीत हुड्डा, प्रवीन गिल, किरन शर्मा, बिंदू दीवाना, जगतार, बलवंद, गोविंद, हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सदस्य एडवोकेट अमनप्रीत कौर, इकबाल सिंह, गुरमेल सिंह, काका सिंह, मनजीत सिंह, परमजीत सिंह, कमलजीत मान, निर्मल सिंह सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और भारी संख्या में संगत ने

यात्रा का स्वागत किया। इसी कड़ी में नगर कीर्तन यात्रा कल वीरवार को भूना से प्रातः रवाना होकर गांव सनियाणा पहुंचेगी, जहां नागरिकों द्वारा मर्यादा पूर्वक स्वागत किया जाएगा। इसके बाद यात्रा मेन बस अब्दु पिरथाला, गुरुद्वारा सिंह सभा ललौदा, बाईपास टोहाना स्थित गुरु नानक धर्मशाला, तथा गुरुद्वारा कवालवाला में भव्य स्वागत प्राप्त करेगी। सभी पड़ावों पर संगत और सामाजिक संगठनों द्वारा दर्शनार्थियों के लिए लंगर और सेवा की विशेष व्यवस्थाएं की जाएंगी। इसके उपरांत यात्रा धमतान साहिब की ओर प्रस्थान करेगी।

वीडीओ-बीएलओ आत्महत्या मामले में महासंघ ने सौंपा ज्ञापन

भीम प्रज्ञा न्यूज़

श्रीमाधुपुर । अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ ने बुधवार को उपखंड कार्यालय में मुख्य सचिव राजस्थान के नाम ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन ग्राम विकास अधिकारी (वीडीओ) और बीएलओ शिक्षक की आत्महत्या के मामले में निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर दिया गया है।

निष्पक्ष जांच और दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की

सीकर जिला संगठन मंत्री बनवारीलाल सामोता के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन में बताया गया है कि भीलवाड़ा जिले की शाहपुरा पंचायत समिति में पदस्थापित वीडीओ शंकरलाल मीणा और जयपुर में झोटवाड़ा विधानसभा के धर्मपुरा भाग संख्या 175 के बीएलओ शिक्षक मुकेश जांगिड़ ने उच्चाधिकारियों के मानसिक दबाव के कारण आत्महत्या की। महासंघ ने इस मामले की निष्पक्ष जांच

कराने और दोषी अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। साथ ही, दिवंगत दोनों कर्मचारियों के परिजनों को न्यूनतम 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की भी मांग की गई।

संयुक्त कार्रवाई का असर: सीआईए टोहाना, सीआईए रतिया, सीआईए फतेहाबाद, साइबर सेल और धानास्तर की संयुक्त कार्रवाई ने जिले में अपराधिक नेटवर्क को करारा झटका दिया। यह अभियान दिखाता है कि फतेहाबाद पुलिस ने अपराध नियंत्रण और आमजन की सुरक्षा को लेकर एक मजबूत संदेश तैयार किया है।

भीम प्रज्ञा न्यूज़

खेतड़ी । खेतड़ी थाना क्षेत्र के पपुरना गांव में चार दिन पहले लापता हुए 13 वर्षीय बच्चे का सुराग न मिलने से ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। बुधवार को



निशांत मेघवाल आठवीं कक्षा में गांव के स्कूल में पढ़ता था। वह 16 नवंबर को सुबह करीब 6 बजे अपने घर से लापता हो गया था। परिजनों ने निशांत की काफी तलाश की, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिल पाया।



पुलिस अधीक्षक का संदेश: एसपी सिद्धांत जैन ने कहा कि 'ऑपरेशन ट्रेक डाउन' का उद्देश्य जिले में अपराधियों की गतिविधियों पर सख्त अंकुश लगाना और आमजन में सुरक्षा की भावना को मजबूत करना है। फतेहाबाद पुलिस नागरिकों की सुरक्षा और अपराध मुक्त समाज के निर्माण के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य कर रही है। अपराधियों के लिए जिले में अब कोई जगह नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि यह सफलता पुलिस टीम के सामूहिक प्रयास, अपराधमुक्त फतेहाबाद का लक्ष्य: यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब तक फतेहाबाद पूरी तरह अपराधमुक्त नहीं हो जाता, और आम जनता सुरक्षा और भरोसे के साथ जीवन यापन कर सके।

खुफिया सतर्कता और त्वरित कार्रवाई का परिणाम है। ऑपरेशन का अगला चरण मोस्ट वांटेड और फरार अपराधियों की गिरफ्तारी पर केंद्रित रहेगा।



दिल्ली क्राइम सीजन-3 में बड़ी दीदी का किरदार निभाना चैलेंजिंग

दिल्ली क्राइम सीजन-3 और महारानी-4 से ओटीटी पर तहलका मचाने वाली हुमा कुरैशी हर तरफ छाई हुई हैं। दोनों ही सीरीज को दर्शकों का भरपूर प्यार मिल रहा है और अब एक्ट्रेस ने दिल्ली क्राइम सीजन-3 को लेकर खुलकर बात की है और साथ ही इस बात पर भी जोर दिया है कि सिनेमा में हर तरह की फिल्में बननी चाहिए, चाहे वे छोटी हो या बड़ी। हुमा कुरैशी ने आईएनएस से बातचीत में बड़ी और छोटी दोनों तरह की फिल्में बनाने पर जोर दिया। हुमा ने कहा, हिंदी सिनेमा के लिए हमेशा बड़ी फिल्में ही जरूरी नहीं हैं, इतनी ही जरूरत छोटी और कम बजट वाली फिल्मों की भी है, और ऐसे कार्यक्रम उन सभी स्टार्स, निर्देशकों, और एक्टरों को प्लेटफॉर्म देते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि हमें अच्छी फिल्में बनानी होंगी। हमें ऑडियंस को देखकर अलग-अलग तरह की फिल्में बनानी होंगी। बार-बार एक तरह की फिल्म बनाने से नहीं होगा। बड़ी फिल्में और छोटी फिल्में दोनों को बराबर अहमियत देने की जरूरत है। दिल्ली क्राइम सीजन-3 में अपने निगेटिव रोल पर बात करते हुए हुमा ने कहा, मैंने पहली बार जिंगी में इतना निगेटिव रोल प्ले किया है। जब पहली बार मुझे कॉल आया, तो मुझे लगा कि कॉप के किरदार के लिए फोन किया होगा, लेकिन उन्होंने कहा कि नहीं, आपको निगेटिव रोल करना होगा। ये रोल मेरे लिए प्ले करना मुश्किल था, लेकिन मजा भी आया। उस वक्त मैं महारानी-4 की शूटिंग भी कर रही थी। मेरे लिए एक ही समय पर दो तरह के अलग रोल प्ले करना आसान नहीं था।

बता दें कि दिल्ली क्राइम सीजन 3 में हुमा कुरैशी ने एक दीदी का रोल प्ले किया है, जो छोटी बच्चियों की तस्करी करती है। सीरीज इस बार बस दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके तार विदेश तक फैले हैं। दिल्ली क्राइम सीजन-3 14 नवंबर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो चुकी है, जबकि महारानी का नया सीजन 7 नवंबर को रिलीज हो गई थी। सीरीज को ऐसे मौके पर रिलीज किया गया, जब बिहार में जनता नई सरकार चुनने की तैयारी में थी। महारानी-4 बिहार की राजनीति पर बनी सीरीज है, जिसके शुरुआती तीन सीजन जबरदस्त रहे हैं। चौथे सीजन में कहानी को आगे बढ़ाते हुए इस बार पीएम पद की लड़ाई देखने को मिली है।



मां वंदे में पीएम मोदी की मां का किरदार निभाएंगी रवीना

रवीना टंडन हमेशा अपने दमदार और संवेदनशील अभिनय के लिए जानी जाती हैं। हाल ही में फिल्म पटना शुक्ला और लॉयर में उनके प्रदर्शन को दर्शकों ने खूब सराहा था। अब खबर है कि रवीना एक और महत्वपूर्ण किरदार निभाने जा रही हैं। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बायोपिक मां वंदे का हिस्सा बन गई हैं। इस फिल्म में रवीना, प्रधानमंत्री की दिवंगत मां हीराबेन मोदी की भूमिका निभाएंगी। फिल्म का निर्देशन क्रांति कुमार करेंगे, जबकि दक्षिण भारतीय अभिनेता उन्नी मुकुंदन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका में नजर आएंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक... रवीना इस किरदार को लेकर बेहद उत्साहित हैं। वह हमेशा से हीराबेन की सादगी, संघर्ष और कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक रहने की क्षमता की प्रशंसा करती हैं। एक सूत्र ने बताया कि यह फिल्म मां-बेटे के रिश्ते पर बेस्ड भावनात्मक फिल्म होगी। इसमें हीराबेन के त्याग, उनकी दृढ़ता और मोदी के जीवन में उनके योगदान को प्रमुखता से दिखाया जाएगा। रवीना, हीराबेन के जीवन की इन्हीं बातों से प्रभावित होकर इस प्रोजेक्ट से जुड़ी हैं। साउथ इंडस्ट्री के एक्टर उन्नी मुकुंदन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका में नजर आएंगे।



बॉलीवुड में सब बस अपना फायदा देखते हैं, यहां कोई किसी के लिए नहीं लड़ता

सयानी गुप्ता इन दिनों चर्चित वेब सीरीज दिल्ली क्राइम 3 को लेकर चर्चा में हैं। लड़कियों की तस्करी के मुद्दे पर आधारित इस सीरीज में वो नेगेटिव रोल में हैं। उन्होंने बताया कि ने देखा कि कुछ असिस्टेंट डायरेक्टर रात के डेढ़ बजे फुटपाथ पर बैठकर कैब की राह देख रही थीं। जॉली एलएलबी 2, फोर मोर शॉट्स प्लीज, पगलैट जैसी फिल्मों और सीरीज का हिस्सा रही एक्टरस सयानी गुप्ता इन दिनों चर्चित वेब सीरीज दिल्ली क्राइम 3 को लेकर चर्चा में हैं। लड़कियों की तस्करी के मुद्दे पर आधारित इस सीरीज में सयानी नेगेटिव भूमिका निभा रही हैं।

किसी को तो विलन बनना पड़ेगा

खुद एक फेमिनिस्ट होने के बावजूद सीरीज में बच्चियों के साथ हिंसा करने जैसे सीन करने को लेकर सयानी कहती हैं, हम एक्टर हैं और एक्टर होने के नाते आप हर तरह का रोल करना चाहते हैं। किसी को तो विलन बनना पड़ेगा। किसी को तो बुरे इंसान का रोल भी करना पड़ेगा और कन्विंसिंग तरीके से करना होगा। मैंने अपने 14 साल के करियर में दूसरी बार बुरे इंसान का रोल

किया है और मुझे बहुत मजा आया क्योंकि मैं इसमें बहुत ही बदमाश हूँ, जबकि असल जिंदगी में बिल्कुल भी बदमाश नहीं हूँ। पर्सनली मुझे हिंसा से नफरत है, मैं ट्रिगर हो जाती हूँ, पर इसमें मारपीट करने, गंदी-गंदी भाषा में गाली देने में बहुत मजा आया, क्योंकि जो आप नहीं रियल में नहीं कर सकते, वह एक्टर के तौर पर करने में भी एक मजा है। फिर, देखा जाए तो कोई भी इंसान पूरी तरह अच्छा या बुरा नहीं होता। शो में ही मेरे किरदार कुसुम की बात करें तो वह खुद दबाई गई है, इसलिए वरुन बन गई है।

वो मुद्दे परेशान करते हैं वो दिखाना पसंद

लेकिन क्या लड़कियों की बेबसी का फायदा उठाने, उनकी सोदेबाजी जैसे सीन उन्हें झकझोरते या परेशान करते हैं? इस पर उन्होंने कहा, मुझे असल में उल्टा लगता है कि हम एक्टरों के पास ये हथियार है कि जो चीजें या मुद्दे हमें परेशान करते हैं, उनको दिखाकर हम लोगों को सोचने पर मजबूर कर सकते हैं। मतलब, जो मुद्दे मुझे परेशान करते हैं या सोच में डालते हैं, मैं उन कहानियों का हिस्सा जरूर बनना चाहूंगी, क्योंकि अगर हम किसी फिल्म या शो के जरिए उसे मेनस्ट्रीम में ला जाएं और उस पर चर्चा हो तो इससे बेहतर क्या होगा। वे लड़कियां इतनी रात में घर कैसे जाएंगी। मुझे लगता है कि हम एक्टर उस जगह पर हैं जहां उन लोगों के लिए बोल सकते हैं, जिनकी नहीं सुनी जाती तो आवाज उठाना हमारा कर्तव्य है।

हमारे यहां कोई दूसरे के लिए नहीं लड़ता

सयानी को फिल्म सेट पर टीम संग गैरबराबरी से जुड़ी कई चीजें भी परेशान करती हैं। शूटिंग की शिफ्ट तय होने की चर्चा छिड़ने पर वह बेबाकी से कहती हैं, हमारे यहां एक्टर की मजबूत यूनियन ही नहीं है। जैसे हॉलिवुड में एआई को लेकर इतनी बड़ी हड़ताल हुई। पूरी इंडस्ट्री के एक्टर, डायरेक्टर वो चाहे कितने भी अनुभवी या नए थे, हर कोई साथ आया, काम बंद किया। हमारे यहां ऐसा नहीं है। यहां सब अपना-अपना सोचते हैं। कोई किसी के लिए नहीं लड़ता। हम भारतीयों की सोच यही है कि हमारा काम नहीं जाए। मैं वयों लड़ूँ, यहां हर कोई ओवरटाइम करता है जिसका उन्हें कोई एक्स्ट्रा पैसा नहीं मिलता। देखिए, बतौर एक्टर मैं 20 घंटे भी काम हुआ तो करूंगी, पर जो लाइटमैन सबसे पहले आता है और सबसे बाद में जाता है और वो ट्रेन से जाएगा। उसके पास गाड़ी नहीं है। ऐसे सैकड़ों लोग सेट पर होते हैं, जिनके लिए बेसिक सुविधाएं नहीं होती।

लक्ष्मण उतेकर की फिल्म ईथा में दिखाई देंगे रणदीप हुड्डा

बॉलीवुड अभिनेत्री श्रद्धा कपूर इन दिनों अपनी नई फिल्म ईथा को लेकर चर्चा में हैं। 2024 में रिलीज हुई स्त्री 2 की बड़ी सफलता के बाद श्रद्धा अब एक बार फिर अलग अंदाज में नजर आएंगी। इस फिल्म का निर्देशन लक्ष्मण उतेकर कर रहे हैं, जिन्होंने पहले छवा जैसी फिल्म बनाई थी। ताजा जानकारी के अनुसार... फिल्म में श्रद्धा के साथ अभिनेता रणदीप हुड्डा मुख्य भूमिका निभाते नजर आएंगे। यह पहली बार होगा जब श्रद्धा और रणदीप स्क्रीन पर दिखेंगे। दोनों के बीच लगभग 11 साल की उम्र का अंतर है। शूटिंग महीने के अंत तक मुंबई में शुरू होने वाली है। रणदीप और श्रद्धा दोनों को लेकर निर्माता बेहद उत्साहित हैं, क्योंकि दोनों ही कलाकारों में गहराई और बहुमुखी प्रतिभा है, जो निर्देशक की सोच से पूरी तरह मेल खाती है। कहानी की बात करें तो यह फिल्म एक मशहूर लावणी और तमाशा कलाकार विठाबाई नारायणगांवकर की बायोपिक है। श्रद्धा इस किरदार के लिए लावणी डांस की ट्रेनिंग ले रही हैं।



ब्रेक के बाद निर्देशक दानिश असलम की फिल्म से वापसी करेंगे इमरान खान

आमिर खान के भांजे और अभिनेता इमरान खान 10 साल बाद फिल्मों में वापसी कर रहे हैं। वह अपने पुराने दोस्त और निर्देशक दानिश असलम के साथ एक नई फिल्म बना रहे हैं, जिनके साथ उन्होंने 15 साल पहले ब्रेक के बाद बनाई थी। हाल ही में एक इंटरव्यू में इमरान ने अपनी वापसी और इस फिल्म के बारे में खुलकर बात की।

इमरान ने एक इंटरव्यू में बताया कि उनकी आगामी फिल्म ब्रेक के बाद की तरह ही है। उन्होंने कहा, यह फिल्म मेरे और दानिश के जीवन के अनुभवों से बनी है। दानिश की शादी हो चुकी है, और मेरा तलाक हो गया है। यह एक निजी प्रोजेक्ट है, जो दोस्तों के साथ मिलकर कहानी कहने की इच्छा से शुरू हुआ। फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है और यह पोस्ट-प्रोडक्शन में है। जल्द ही स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर रिलीज डेट की घोषणा होगी।

ब्रेक के बाद की कहानी इमरान ने बताया कि उन्होंने पहले ब्रेक के बाद फिल्म के लिए मना कर दिया था। उस समय वह आई हेट लव स्टोरीज की शूटिंग कर रहे थे। दानिश ने उन्हें कहानी सुनाने की कोशिश की, लेकिन इमरान को कहानी सुनना पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने मना कर दिया। बाद में एक पार्टी में दानिश से मुलाकात हुई और उनकी बातचीत से इमरान का मन बदल गया। दानिश ने उन्हें स्क्रिप्ट भेजी, जो इमरान को पसंद आई, और फिर उन्होंने फिल्म की शूटिंग शुरू की।

इमरान का करियर

आखिरी बार इमरान 2015 में फिल्म कट्टी बट्टी में नजर आए थे। इस फिल्म के बाद उन्होंने अभिनय छोड़ दिया था, क्योंकि उन्हें मिलने वाले किरदार पसंद नहीं आ रहे थे। अब वह वापसी कर रहे हैं, लेकिन वह अपने प्रोजेक्ट्स को लेकर बहुत सावधानी बरत रहे हैं।

हैवान में अक्षय को चेज करते दिखेंगे सैफ

अक्षय कुमार के काम की स्पीड एक बार फिर चर्चा में है। प्रियदर्शन के निर्देशन में बन रही फिल्म हैवान की शूटिंग हाल ही में मुंबई के चर्चगेट स्टेशन के पास पूरी हुई। इसमें अक्षय और सैफ अली खान ने लगातार पांच देर रातों तक शूटिंग कर फिल्म का क्लाइमेक्स सीक्वेंस कंजलीट किया। फिल्म में बड़े पैमाने पर एक्शन सीक्वेंस शूट किए गए हैं। इस सीन में करीब 30-40 कारें और 100 जूनियर आर्टिस्ट शामिल थे, जिसे एक्शन डायरेक्टर स्टैट सिल्वा ने कोरियोग्राफ किया। रात के समय आउटडोर शूटिंग को लेकर प्रियदर्शन ने कहा कि... मुंबई जैसे व्यस्त शहर में इतनी बड़ी यूनिट के साथ शूट करना आसान नहीं था लेकिन अक्षय और सैफ ने बेहद प्रोफेशनल अंदाज में साथ दिया।

मलयालम थ्रिलर ओप्पम की हिंदी रूपांतरण है ये फिल्म

दिलचस्प बात यह है कि अक्षय आमतौर पर जल्दी सोने के लिए जाने जाते हैं लेकिन उन्होंने इस लेट-नाइट शूट में पूरी तन्मयता से काम किया। फिल्म हैवान प्रियदर्शन की 2016 की मलयालम थ्रिलर ओप्पम की हिंदी रूपांतरण है। जहां मूल फिल्म में मोहनलाल ने लीड निभाया था, वहीं हिंदी वर्जन में सैफ ने एक नेत्रहीन व्यक्ति के किरदार में हैं, जिसकी सूंघने और

सुनने की शक्ति बेहद तीव्र है। वे अक्षय के विलन किरदार से भिड़ते हैं।

अगस्त में शुरू हुआ था शूट

प्रियदर्शन ने बताया... हैवान एक कॉमेडी थ्रिलर है जिसमें नायक और खलनायक के बीच चूहे-बिल्ली की पकड़म-पकड़ाई जैसे खेल चलता है। फिल्म का बड़ा हिस्सा अगस्त 2025 में शूट होना शुरू हुआ था और अब लगभग पूरा हो चुका है।



बैक-टू-बैक कई प्रोजेक्ट हैं अक्षय के पास

अक्षय, प्रियदर्शन की एक और कॉमेडी-हॉरर फिल्म भूत बंगला में भी दिखेंगे। इसमें उनकी जोड़ी तबु के साथ 25 साल बाद बनेगी। साथ ही परेश रावल और राजपाल यादव जैसे दिग्गज कॉमेडियन भी फिल्म में नजर आएंगे। वहीं 2027 में ही रिलीज होने वाली उनकी ओह माय गॉड फिर एक बार सामाजिक और धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य करेगी, जिसमें अक्षय एक बार फिर गॉड के मैसेंजर बनेंगे।

वहीं 2027 साइको में आने वाली है जो एक साइकोलॉजिकल एक्शन थ्रिलर है। यह अक्षय को एक डार्क और गहन अवतार में दिखाएगी। इसके अलावा रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स का अगला अध्याय सूर्यवंशी 2 है, जिसमें अक्षय, अजय देवगन और रणवीर सिंह एक साथ फिर से धमाकेदार एक्शन अवतार में लौटेंगे।

श्रिया पिलगांवकर ने भी पूरी की फिल्म हैवान की शूटिंग

श्रिया पिलगांवकर ने भी हैवान की शूटिंग पूरी कर ली है। इस बात की जानकारी उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर साझा की। श्रिया ने निर्देशक प्रियदर्शन के साथ फिल्म के सेट से एक खास तस्वीर पोस्ट की है, जिसमें दोनों मुस्कुराते नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर में श्रिया हाथ में एक क्लैप बोर्ड पकड़े

दिख रही हैं, जिस पर फिल्म का नाम हैवान लिखा है। श्रिया ने लिखा... मेरे लिए हैवान का काम खत्म हुआ। इस शानदार टीम के साथ काम करना एक सौभाग्य रहा, जिसका नेतृत्व निर्देशक प्रियदर्शन ने किया।



